भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

व्यंजनामूलक शब्द

पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीट-पतंग आदि छोटे-बड़े समस्त प्राणियों का मानव-जीवन से गहरे संबन्ध का मूल कारण है सृष्टि का सबकुछ उपयोगी होना। मनुष्य अपनी इच्छाओं, कामनाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप अपना सम्बन्ध विस्तृत करता है। इन प्राणियों के चरित्र के साथ मानव अपने चरित्र का तादात्म्य स्थापित कर उनके समीप जाना चाहता है। इनके चरित्र से हमारे काव्य दर्शन एवं आध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को भी जन सामान्य तक पहुँचाने में काफी सहायता मिली है। 'मानस' में काक-भुशुण्डी संवाद में भक्ति-आन्दोलन का पूरा इतिहास समाहित है; पंचतंत्र, हितोपदेश, बुद्ध की जातक कथाओं आदि में पशु-पक्षी पात्रों का रोचक-अर्थपूर्ण वर्णन मिलता है। इन जीवों से मनुष्य का सदियों से रागात्मक संबन्ध रहा है। चन्द्र-चकोर में अपलक प्रेम की तन्मयता, राजहंस का नीर-क्षीर विवेक, स्वातिबूंद के लिए प्यासे चातक की आतुरता, पपीहे का 'पी कहाँ' में विरहिणी की मर्मभेदी व्याकुलता, चक्रवाक में संयोग की विवशता, गरूड़ में विषधर पर विजय प्राप्त करने की अद्भुत क्षमता आदि भावों से हमारे साहित्य रचे-बसे हैं। मनुष्य ने इन प्राणियों को अपने दोस्त एवं दुश्मन दोनो रूपों में पहचाना है। साथ ही अपने स्वभाव एवं चरित्र को उनके स्वभाव एवं चरित्र से जोड़ कर देखा है। इ स प्रकार का सूक्ष्म अनुभव कम पढ़े-लिखे या अपढ़ ग्रमीण समाज में भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं और लोक-भाषिक या अनुभव परम्परा में प्रवाहमान हैं।

एक प्रखर बुद्धि संपन्न समाज किसी विषय, वस्तु या व्यक्ति को जितने ही करीब एवं सूक्ष्मता से देखता है, उसे उतनी ही विशेषताओं का दर्शन होता है। इन विशेषताओं को शब्दों में ढालने पर उसकी शब्द संपदा भी बढ़ती है। जब हम किसी वस्तु, विषय या व्यक्ति की तुलना अन्य से करते हैं, तब भी ज्ञान के विकास के साथ-साथ नवीन शब्दों का संज्ञान होते-चलता है। ऐसे ही कुछ अनुभव जन्य प्रतीक नीचे दिये जा रहे हैं।

पक्षी-संबन्धी

उल्लू - मूर्ख के लिए
उरूआ - मंद बुद्धि वालों के लिए
कुचकुचवा - आँख मिचमिचा कर देखने वालों के लिए
कोयल - मधुर भाषी के लिए
खिरलिच - लयबद्ध तीव्र जाल के लिए
गवरा - प्यारा मासूम बच्चा के लिए
गीध - अभक्ष्य भोजन करने वालों के लिए
धाटो-बिलारो - समूहबद्ध होकर उमंग में गीत गाते जा रही स्त्रियों के लिए
चकवा-चकई - परेशान जिंदगी की दशायें
चुचुहिया का बोलना - सुबह का संकेत
मूर्गा का बोलना - भोर, भिनुसार होने का संकेत
चिल्होर - तह में छुपे सामान को भी ढूँढ लेने वाली दृष्टि वालों के लिए
चोंचा - झगड़ालू, चर-भर करने वाली औरतों के लिए
चमगादड़ - असभ्य, नंग-धडंग रहने वालों के लिए
चाही - किसी चीज को झपट लेने की नीयत से दृष्टि गड़ाए व्यक्ति के लिए
पपीहरा - भूखा-प्यासा, असहाय, लुटे हुए व्यक्ति के लिए
फुरगुद्दी - चंचल-स्फुर्त व्यक्ति के लिए
बगुला - केन्द्रित हो मन से ध्यान लगाने वाले व्यक्ति के लिए
बुलबुल - प्रसन्न-खुश, चहचहाते व्यक्ति के लिए
बाझ - आतंक जमाने वाले, झपट्टा मारकर कुछ झटक लेने की नीयत रखने वाले व्यक्ति के लिए

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

भुचंग - अति श्याम वर्ण व्यक्ति के लिए - 'करिया-भुचेंग'
मैना - मधुर वाणी बोलने या गीत गाने वाली स्त्रियों के लिए
महोखा - लड़ाकू प्रवृत्ति, या किसी का कुछ हड़प लेने की नीयत वालों के लिए
सुग्गा - रटंत-बुद्धि वालों के लिए
डूमर - इर्द-गिर्द खड़ा होकर चहलकदमी मचाने वालों के लिए

पशु संबन्धी

गाय - सीधा, सरल, सहनशील, विनम्र और स्वभाव से ही किसी का अहित न सोंचने वाले व्यक्ति के लिए
भैंस - असभ्य रहन-सहन, अल्हड़, आलसी व्यक्ति के लिए
बैल - काफी परिश्रमी किन्तु मंद बुद्धि वालों के लिए
हाथी - भारी-भरकम, मोट-झोंट शरीर वालों के लिए
खच्चर - झगड़ालू, किसी की इज्जत का ख्याल न करने वाला
गदहा - गदहा मंदबुद्धि का परिश्रमी
पाड़ा - लंठ, मोट बुद्धिवाला
घोड़ा - परिश्रमी किन्तु अकड़ने वाले व्यक्ति के लिए
ऊँट - लंब-धडंग, दुबले-पतले, ऊपर देखकर चलने वाले व्यक्ति के लिए
कुत्ता - लालची, घर-ढूँढ प्रवृत्ति, झीट-झपट कर खाने वाले व्यक्ति के लिए (उपेक्षा-भाव में मुहावरा - 'नाम पर कुत्ता पोसल')
बिलार - प्रत्यक्ष में स्नेहिल एवं विनम्र किन्तु परोक्ष में चतुर, बुद्धिमान प्राणी के लिए
खेंखर - दंत-चिआर, हँसोड़ व्यक्ति के लिए
खेंखर-बिलार - चारो ओर से उपेक्षा, डाँट-फटकार, सहने रहने वाले व्यक्ति के लिए (खेंखर-बिलार के दसा)

कीड़े-मकोड़े- संबन्धी

गेहुँन - अत्यन्त क्रोधी, असहनशील, तन कर उठ खड़ा होने वाले व्यक्ति के लिए
करैत - अत्यन्त कटु-भाषी, क्रोधी व्यक्ति के लिए
अजगर - भुक्कड़ तथा आलसी के लिए
हड्डी-बिरनी - थोड़ी सी प्रतिकूल बात पर भी नोच खाने वाली मनोवृत्ति हेतु
मच्छड़ - शोषक, कायर, कमजोर स्वभाव के लिए
माछी - किसी बने हुए काम में अचानक विघ्न उपस्थित हो जाने पर, जिससे उसे न छोड़ा बने न किया ही बने, तब कहा जाता है - 'दूध में माछी पड़ गइल'
गोजर - समृद्ध-संपन्न के लिए, जिसका कुछ नुकसान भी हो जाय तो कोई फर्क नही - 'गोजर की टांग'
गोबरौरा - गंदे ढ़ग से, गंदगी में रहने वालों के लिए 'गोबर का कीड़ा' या 'गोबरौरा' प्रयुक्त होता हैं।
गन्हवा - कोई ऐसी बात, या प्रसंग अथावा व्यक्ति, जिसकी वजह से बना बनाया काम बिगड़ जाय, तब कहा जाता है - 'वही 'गन्हवा' बन गया, नही तो काम हो जाता।
पतिंगा - भावावेष में कोई अनर्थ कर बैठने या व्यर्थ के झंझट में पड़ जाने वाले व्यक्ति के लिए कहा जाता है- 'पतिंगा की तरह आग में कूद गइल।
चिलर - किसी सामान्य सी बात पर हिल्ला-हुज्जत करने की स्थिति में 'चिलर का चह तुरना' कहा जाता है
चिंउटा - कोई वजनी या भारी सामान उठाने, कोई विशिष्ट कार्य के लिए तन मन से भिड़ने के लिए 'चिंउटा के तरह भिड़ल' कहा जाता है।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

छुछुन्दर - जिसमें गंभीरता न हो और चाल-चलन ठीक न हो।

घून - कुसंगति अस्थिर, गंभीर न रहने वाले दरिद्र मनोवृत्ति के व्यक्ति के लिए गेहूँ के साथ घून का पिसा जाना कहा जाता है।

खोभार - वह घर जिसमें सुअर रहते हैं।

शब्द-संरचना

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

'हार' (=वाला)
- खइनीहार = खाने वाला
- दुहनियार = दूहने वाला
- सोहनियार = सोहनी करने वाला
- बनिहार = मजदूरी करने वाला
- मनिहार = मणिमाला बेंचने वाला

'वाह' (= वाला)
- हरवाह = हल चलाने वाला
- चरवाह = पशु चराने वाला
- घसवाह = घास काटने वाला
- कुदरवाह = कुदाल चलाने वाला

'अई'- (किसी क्रिया की अधिकता में)
- जबरई = जबर्दस्ती
- लबरई = झूठा
- खइनई = खूब खाना-पीना

'वहिया'
- घोड़+वहिया = घोड़ा पर माल लाद कर व्यापार करने वाला
- पड़+वहिया = भैंस पड़रु का व्यापार करने वाला
- जल+वहिया = नाव से व्यापार करने वाला

'कू'

- इस प्रत्यय से बना शब्द प्रायः दिखावा के अर्थ में होता है और इसमें व्यंग्य छुपा रहता है।
- लड़ाकू = लड़ने वाला
- पढ़ाकू = पढ़ने वाला

'हा' - (वाले)
- डेरहा - डेरावाले
- दिअरहा - दिआरा वाले
- परहा - पार वाले
- खेतहा - खेत वाले
- बनहा - वन में रहने वाले 'बनेया'
- बेटहा - वर पक्ष से बेटा वाले

'गर' - (अधिकता सूचक)
- गलगर - गाल बजाने वाला
- मुँहगर - अधिक बोलने वाला
- लुरगर = ढंग से
- दुधगर = दुधारू
- नूनगर = अधिक नमीकन
- छरगर = छरहरा
- जोरगर = बलशाली
- सनगर = तेज
- पनिगर = तंज (बैल)
- पसगर = सही अंदाज से
- खनगर = निमन, अच्छा

'वान' -

- धनवान, कोचवान, गाड़ीवान, पहलवान, पिलवान, बलवान, भगवान

'मातर'- अर्थ-ही
- देखते मातर = देखते ही
- कहते मातर = कहते ही
- खाते मातर = खाते ही
- जाते मातर = जाते ही
- छूते मातर = छूते ही

'आह' -
- सनक + आह = सनकाह
- बिख + आह = बिखिआह
- खिस + आह = खिसिआह
- लत + आह = लताह
- पेट + आह = पेटाह
- नेट + आह = नेटाह
- टेंट + आह = टेंटाह
- ढेल + आह = ढेलाह

'वैया' -
- देखवैआ, खवैआ, गवैआ, जलवैआ

'लेखाँ' - (= की तरह)
- सूअर लेखां - पटाइल बा

'दे' -
- धांय दे - गोली लागल
- कांय दे - क के मर गइल
- टांय दे - बोललख, मरलख
- चांय दे - चिचिआइल
- छांय दे - जल गईला
- भांय दे - चिल्लईलऽस
- सांय दे - गोली निकल गइल
- ठांय दे - जबाब देहलख

'भर' -
- हाथ भर = एक हाथ का
- दाम भर = दाम भर का
- दिन भर = पूरा दिन
- पेट भर = भर पेट
- इच्छा भर
- जोर भर
- बलभर
- पलभर

'ही' -
- गदही
- नदही
- कटही
- घटही
- चटही
- जटही
- झटही
- टटही
- नटही
- पटही
- मटही
- लटही
- चोटही
- झोंटही
- टोटही
- टुटही
- पकही
- भगही
- संगही
- सोगही
- केंगही - केंघी

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

- कटहा - काटने वाले (कुत्ता,बन्दर)
- घटहा - घाट वाले नाव
- जटहा - जटा-जूट वाले साधु, बच्चा
- फटहा - मुँहफट
- पगहा - पैदल यात्री, रस्सी
- पनहा - पानी में रहने वाला सर्प, जूता
- पतहा - पत्ता वाला फसल या स्थान
- भरहा - भार ढोने वाले वाले कहार
- हरहा - हरकाह जीव (गिलहरी, खरगोस, कौवा आदि)
- चरहा - चारागाह, चरने वाले पशु, चरवाह

- कुकुर लेखां - भोंकऽता
- कुम्हकरन लेखा - सुतल बा

'चाके' - (= सा) -
- नखी चाके = छोटा सा
- हेती चाके = छोटा सा

'से' -
- खट से - खड़ा
- गट से - निगल गया
- चट से - दाव मारल
- झट से - भागल
- पट से - टूटल
- फट से - आवाज
- टप से - चू गइल

'गार' -
- लगार = पुरकस
- पगार = भोजनोपरान्त, गाय-भैस के आगे डाला गया चारा, बोनस
- कगार = किनारा
- बेगार = बिना मन, मजदूरी के कार्य (बैठल से बेगार भला)
- घेघार = घेघ वाला
- डेगार = झड़क कर
- छिगार = छिट-पुट, झांझर
- निगार = बदला
- बिगार = झगड़ा
- जुगार = इन्तजाम

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

वस्तु-स्थान

मकरा - जाल	घोड़ा - घोड़सार	बाघ - छिछोर लेहलख
मध - छाता	छोटाघर - दरबा	गाय - ढाही मरलख
बिरनी - खोंता	हार - चिड़ियों का	बैल - हुरपेटलस
माटा - थोक, खोंता	झुण्ड - पशुओं का	घोड़ा - लतिअवलस
चिरई - घोंसला	जमात - साधुओं का	हेव - मवेशी (रोकने के लिए)
सियार - मान	पांत - भोजन करने वालों का	गत - हाथी (आगे बढाने हेतु)
चूहा, साँप - बिअल	भीड़ - मनुष्यों की	दूर - कुत्ता (भगाने के लिए)
गोरु - घारी	बिछी - 'टं' से मारल 'डंक'	हेल - पशु (पानी में पौड़ाने के लिए)
सुअर - खोभार	बिरनी - लबध लेहलख	हट - पशु (पानी के बाहर आगे बढ़ने के लिए)
हाथी - हथिसार	कुत्ता - भंभोर लेहलख	

उपमान शब्द

- आँख पर बुझाऽता कि भंवरा गुजरता	- टहांटह अंजोरिया	- भर खटिया के चौखट खानी देह
- भंवरा खानी केस	- कचमच गदबेर	- एकदम पियर कल्हा (बहुत कमजोर)
- अंजोरिया धरम के रात	- लहालह दुपहरिया	- ढकचल पिली
- बंसुरी के तरे नाक	- गोड़ जर के फुटहा हो गइल, भुट्टा हो गइल	- खुंटा लेखा खड़ा
- आँख पर बुझाता कि भंवरा गुजरऽता	- जरनिआह घाम, कड़ा दुपहरिया	- दिवाल खानी खड़ा
- आम के फांक एहिसन आँख	- बालू धिक के आगी भइलइ बा	- सूख के गतान
- आँख छीलल लीची	- लाल भभूका	- बुढ़ा के पंचर
- आँख उलथ-उलथ (बड़ा-बड़ा) बा	- लाल टुह-टुह, लाल टेस	- लटक गइले
- आँख हेती-हेती (छोट-छोट) बा	- पियर दब-दब	- चोखा रंग
- आँख के कोन ह कि कटारी के कोर?	- पाक के मध, मधुबन, चीनी झूठ, मिश्री लेखा	- चाल हिरनी के
- काजर के धार ह कि फींकी तलवार?	- पियर बुंद (खूब पका हुआ)	- बजर बहिर
- बंसुरी तरे नाक, छूरी लेखा नाक	- चाबूक खानी देह	- मुँह-चुहाड़ जइसन
- सुगा के ठोर एहिसन नाक	- रोशायन देह	- कवनो गत के ना
- नाक चीलम जइसन	- सूख के अमचूर	- कान जनकपुर के झाल
- ओठ ह कि कतरल पान!	- सीसा खानी देह चमचम	- मुँह सतहवा
- मूस के पोंछ एहिसन मोंछ	- सूख के खटाई	- फहाफह ऊजर
- मोंछ ह कि बिछी के डंक	- सूखके झांवर	- बगूला के पांख लेखां उजर
- दाँत बुझाऽता कि मीसी बइठावे	- सूख के संठी	- चरक लेखां उजर
	- सूख के लकड़ी	- गोर कपील
	- करेज सूख के छोहड़ा	- आँख नइखे ठहरत (खूब चमकदार)
		- अन्हार घर के टेमरोशन (काफी गौरवर्ण रोशनायन, गुणवन्ती, प्रसन्न

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

लायक बा - करिया झांवर - करिया भुचेंग, कौअवा गोराई - करिया कुचकुच छपले बा, अन्हार कूप - कर्हाई के पेनी लेखा करिआ - अंजोरिया धरम के रात, भींगल रात	- भर पंजा के देह	करने वाली)

अपशब्द/उलाहना

- राख लगा के जीभ खींच लेब - तर-उपर लाठी ध के जांत देब - कवना तंत के हईं जानत नइखू! भूजा सभऽतर भुजाई, लेकिन भरवा हमहीं देब - हमहीं सिखाएब - सोझे दुआरी आगी लगा के फूंक देब - बाती छटका देब - गड़ाए गइल बा - तोपाए गइल बा - मुआ के बरम्ह पुजेब - मांग में आगिए जोर देब - मोंछ उखाड लेब - टेढ़ होके चलबे त डैने अइंठ देब - करिखही हॉडी से मारेब - चूल्हिए में जोर देब - जीभ खींच लेब - खत काट लेब - बोकला छोड़ा देब - छाल खींच लेब - उमकल छोड़ा देब - घेंट अइंठ देब	- लसार-लसार के मारेब - दाँत लगा-लगा के मारेब - लुआठी खालेऽ - घरी-घरी खेपऽतानी - तहार घरी निअराताऽ - हमरे हाथे लिखऽता - बइठल विषकुल्ला कइले बा - ठुसुर-ठसुर करऽ ता - बड़ा अगराइल बाड़ी - धधा गइल बा - अपना के धनुकाइन भइल बाड़ी - बड़ा चोना करऽ तारी - नव जाने ली छव ना जाने ली - बड़ा खेलाड़ी बिआ - ओकर बात सुनते देह में आग लग गइल - तोरा दादा के हाड़ में कबड्डी खेलाईं - गरजऽ मत - तोरा उफर परो - कीरा परो - तोरा मुँह में फूला परो - कोढ़ फुटो	- खिसिए जर के अंगार - एगो खल के बाड़े - उनचास हाथ के अंतरी बा - इनकर थाह लगावे वाला केहू नइखे - बसवा देहले - बेटी भसा देहले - बेटी बिआह देहले कुइयाँ उदह देहले - नीच-ऊँच नइखन बूझत - हाथ दुमावत गइले हाथ दुमावत अइले - ओकरा पा के हो गइल ना तऽ---- - घीनाऽ देहले - खड़े इज्जत लेवे वाला बा - खीं-खीं खीं-खीं दाँत मत चिआरऽ - तेजी देखावऽ तारे - अपने मन निमन भइल बाड़े - बढ़नी मारो इनका चाल सुभाव के - भल बाड़ऽ हो - ओकरा पसंगों में नइखन - दिमाग में हर घरी गारिये छपले बा - लाख कहीं तनिको असर ना परी - हरि गुन गाईं त ओतने, फोद देखाईं त ओतने

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

- लोहू ढरका देब	- मरकी लागो	- तू जवन करऽ तारऽ तवन ठीके बा
- नटिये अइंठ देब	- बजर परो	- एक दिन रोवे के आँख ना जूरी
- बरम्हाड़े फोर देब	- खलर परो	- छोड़ऽ हटावऽ जाए दऽ
- लाद फार देब	- आग लागो	- नीच के संग नीच ना बने के
- टंगरी चीर देब	- जरो धनको	- चोना करऽ तारी
- रान फार देब	- तोरा माटी लागो	- झमकल बाड़ी
- नाल ठोक देब	- काया में घून लागो	- अगराइल बाड़ी
- भुभुन फोर देब	- चुआती लागो	- भवचर जानऽ तारी
- घघेली जांत देब	- पेट बिहंस जाइत = फाट जाइत (पेटक्कड़ों पर व्यंग्य)	- चौरासी भरमऽ तारी
- खान देब	- बढ़नी लागल बा = विपत्ति	- अपना में लगावत नइखी
- पांजर छटका देब	- अनसोहातो = बिना बात के	- लौका बिजली भइल बाड़ी
- बाती तूर देब	- रहनदारी =	- कसहा थरिया खानि गनगनाइल बाड़ी
- बाई मरले बा?	- लोर टप-टप गिरत रहे	- बड़ा वरनकल बाड़ी
- लकवा मरले बा?	- पूल जइसन देह	- बिरिनिआइल बाड़ी
- बीख मत हगऽ	- फूल के कुप्पा = गभुआइल	- हम त अपने छतीसा हईं, हमरा के जन पढ़ावऽ
- बीख मत पादऽ	- लाटा लगावे ले	
- बीख मत ढीलऽ, ना तऽ		

आशीर्वाद / अभिवादन

लखिया होखऽ, बाछी हमार जीअस, सात भाई के बड़ होखऽ, जीअऽ, खुश रहऽ, आबाद रहऽ, बनल रहऽ, मोटाऽ, बुलन्द रहऽ, मस्त रहऽ, चिरंजीवी, एक से एकइस होखऽ, पा लागीं (पंडित जी), दण्डवत (साधु बाबा), सलाम (बाबू साहेब), आदाब (मौलबी साहेब), जय रामजी की (समधी जी), गोड़ लागिले (पंडित जी)

अविधामूलक सामासिक शब्द

अहल - दीहल	गाय - गोरू	देवता - पीतर	भुखल - पिआसल
अमला - फैला	गाली - फक्कड़	दउर - धूप	मोंट - झोंट
अजार - बाजार	गाछ - बिरिछ	दूर - दूर	मोल - जोल
अंट - संट	गाना - बजाना	दर - दर	माल - गोरू
अल - बल	गरीब - गुरबा	दुःख - सुख	मेला - ठेला
अप - जस	गोबर - गोथार	दीन - दुखिया	मोह - माया
अलग - बिलग	गोतिन - पड़ोसिन	दान - पुन	मार - पीट
अन्हरिया - अंजोरिया	गहना - गुरिया	दान - दहेज	मइल - कुचइल
आसन - डासन	घटल - बढ़ल	दाँवल - पीसल	मारा - मारी
आरी - कगरी	घर - बन	दउरी - मउनी	माई - बहिनी
आदमी - जन	घोर - घार	दिना - दिरीठ	मांड़ - भात
आहते - आहते	घर - दुआर	देसक - दूर	मालिक - मुखतार
आपन - आन	घास - पात	धीया - पूता	मरन - जिअन
आगे - पीछे	घाट - बाढ़	धनी - मानी	मछरी - मांस
आपन - पराया	घर - गृहस्थी	धीरे - धीरे	मांज - मुंज

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

आदर - सतकार	घूस - घास	धक्का - मुक्की	मनई - मजदूर
आर - डरेर	घूसा - मुक्की	धर - पकड़	मार - काट
आइल - गइल	घसीट - फसीट	धी - दामाद	टोना - टटका
ओरी - ओरवानी	घटर - घटर	नीमन - बेजाय	टाँय - टाँय
ओढ़ना - बिछौना	घाम - बेआर	नइहर - ससुरा	टापा - टोइया
ओखर - मूसर	चूमा - चाटी	निघटे - निघटे	टोला - टपरी
ओझा - गुनी	चूप - चाप	नेम - टेम	टाट - पलानी
ओरिये - खोरिये	चोर - चुहाड़	नून - तेल	टके - टके
ऊँच - नीच	चिकन - चाकन	नात - नतउर	ठांवे - ठांव
उतिम - मधिम	चिंता - फिकिर	नीप - पोत	ठूस - ठूस
उल्टा - पलती	चाल - ढाल	नजर - गुजर	ठाँव - चउका
उगहन - बाल्टी	चीर - फार	नाद - घोठा	ठाट - बाट
कमाइल - धमाइल	चमक - दमक	नदी - नाला	ठोकल - ठेठावल
कर - धर	चर - चुर	नींच - ऊँच	डर - भय
कइल - धइल	चोट - मोच	नगर - बिसराम	डरावल - धमकावल
कपड़ा - लाता	चउकठ - केवारी	नेह - छोह	डार - पात
क - घ	चबर - चबर	नार - खोर	डाँड़ - मेड़
करज - उआम	चोप - चोपाह	नाचल - कूदल	ढेंकी - जांत
कठ - कोआ	चिरकुट - मिरकुट	नाप - जोख	ढहल - ढिमलाइल
केंठी - माला	चीर - फाड़	पुरखा - साख	रंडी - भंडुआ
कले - कले	चूड़ी - लहठी	पुरखा - पुरनिया	रोज - रोज
काट - कूट	छल - कपट	पूआ - पूड़ी	रोआ - रोहट
काना - फूसी	छोह - नोह	पइसा - कउड़ी	रोआ - कानी
कान्हा - कांखी	छाँट - छूँट	पौनी - पसारी	राज - पाट
कान - कनैठी	छुआ - छूत	पउआ - पाटी	रगरा - रगरी
कीच - कांच	छेर - छार	पटी - पटिदार	राही - बटोही
किन - किन	छेरल - पोंकल	परसो - नरसो	रास्ता - पेंडा
कुटवन - पिसवन	छीन - झपट	पुल - पुल	लूर - ढंग
टूटल - पिसल	छूटल - भटकल	पन - कोआ	लप - चप
कोठा - अमारी	छूरा - छूरी	पीट - पीट	लसर - लसर
इजत - बरोह	छोट - बड़	पोर - पोर	लोग - बाग
इजत - पानी	छहर - छहर	पी - पा	लूगा - झूला
कनिया - बहुरिया	छिट - पुट	पटर - पटर	लेवा - गुदरा
कुसल - छेम	छाँट - छाँट	पइंचा - उधारी	लूला - लँगड़ा
कोला - कोलाई	छेंका - छूंकी	पइसा - ढेबुआ	लड़िका - फड़िका
कांच - पाकल	जोग - टोन	पटका - पटकी	लोटा - डोरी
काम - काज	जग - परोजन	पुरान - धुरान	लात - मुक्का
कह - सुन	जादू - टोना	पीछे - पीछे	लात - जूता
कुहुक - कुहुक	जरना - काठी	पूजा - पाठ	लाज - हया
कुसल - मंगल	जहाँ - तहाँ	परती - परात	लाज - सरम
करता - धरता	जगह - जमीन	पथल - पखान	लौना - लकड़ी
कूंची - बढ़नी	जर - जजाद	पास - पड़ोस	लाता - लाती

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

ककही - थकरी	जग - जूप	पोथी - पतरा	लनर - बनर
कीन - बेसह	जाँच - परताल	पाड़ा - पाड़ी	सेवा - टहल
कल - कराह	जिया - जानवर	फूल - खांड	सुतल - बइठल
कल - बल	जाड़ - ठाढ़	फर - फरहरी	सुआ - सुतारी
खुटुर - खुटुर	जोर - गांठ	फूल - पट्टा	समझावत - बुझावल
खीस - पीत	जन्तर - मन्तर	फाटल - पुरान	साव - हाकिम
खरची - कलेवा	जर - बोखार	फेरा - फेरी	सुखार - दहार
खदर - बदर	जनम - करम	फूस - फास	सुखल - पाकल
खने - खने	जड़ी - बूटी	फूंक - फांक	सहर - सहर
खर - खदुका	जाड़ा - पाला	बर - बटैया	संउसे - संउसे
खर - मुसली	जात - बेरादर	बान्ह - बून्ह	सटा - सट
खच - खच	जोत - जात	बाचल - खूचल	सुरखी - लहठी
खाइल - पिअल	जस - जस	बहार - सोहार	समझ - बूझ
खखड़ल - मखड़ल	झाड़ - फूंक	बजर - बजर	सास - ननद
खींचा - तानी	झगरा - तकरार	बूढ़ - पुरनिया	सास - ससुर
खोज - खाज	झिन - झिन	बरतन - बासन	सोर - सराबा
खा - पी	झुन - झुना	बन - बनिहारी	साँझ - बिहान
खेत - खलिहान	झिहिर - झिहिर	बो - बा	संझा - पराती
खोल - खाल	झर - झर	बाल - बच्चा	साथ - संगत
खुदी - चूनी	झट - पट	बासन - डासन	सुखले - सुखल
खेत - कियारी	झिल - मिल	बारी - कुँआरी	सानी - पानी
खीं खीं - खीं खीं	झोंटा - झोंटी	बाग - बगीचा	सतुआ - बरुआ
खाद - पानी	झगड़ा - झंझट	बेहीं - बखार	सतुआ - भूंजा
गारी - फकरी	झील - झक्कड़	बांट - चोंट	सिंह - ठाकुर
गाजा - बाजा	झिसी - फूसी	बोली - बकार	हवा - बेयार
गांव - गवईं	तय - तपड़ा	बरखा - बूनी	हल्ला - गुल्ला
गाँवां - गाईं	तियन - तरकारी	बापे - पूते	हाड़ - गोड़
गने - गने	तेल - तासन	बकरी - छेर	हाड़ - मांस
गुल - गुल	तड़पा - तड़पा	बनिया - बेकार	हड्डा - बिरनी
गचा - गच	ताल - तलैया	बएल - बधिया	हरदी - चूना
गल - गोंछ	तीज - त्यौहार	भुलाइल - भटकल	हाथी - हथिसार
गुजुर - गुजुर	थर - थर	भुइया - भुपाल	हाव - भाव
गींज - गांज	थोड़ा - बहुत	भूखा - दुखा	हफर - हफर
गुदर - गुदरी	थोर - थार	भोला - भाला	हारल - थाकल
गोला - गोदाम	देह - नेह	भुकुर - भुकुर	हिस्सा - बखरा
गट - गट	देसा - देसी	भादो - भदवार	हिस्सा - पताई
गत - गत	दूर - दराज	भदा - भद	हँसी - मजाक
गार - गुर	दया - माया	भूल - चूक	हिसाब - किताब
गोदा - गोदी	दिया - बाती	भाई - भउजाई	हरबा - हथियार
गाँव - जवार	दवा - दारू	भरम - भटका	हिलावल - डुलावल
गाँव - नगर	दया - माया	भनर - भनर	हलुक - पातर

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

वस्तुनाम :

पक्षियों के नाम

उल्लू, उरूआ, उद, कउआ, कोइलर, कुचकुचवा, कनैली, कठफोरनी, कउआर, कड़ाकूल, खिरलिच, गवरा, गुद्दी, गड़चटका, गीध, गरगुदा, गरूण, गइरी, घाटो-बिलारो, चकवा, चिल्होर, चुचुहिया, चोंचा, चमगादड़, चाही, चंडोल, जांघिल, तितिल, तीतर, दाबिल, दिगवच, धनेस, धोबिन, नदियायी परेवा, टर, टिटिहरी, पंडुक, परेवा, पुकपुकिया, पतेंगर, पनडुब्बी, पपीहरा, पिंगल, फुरगुद्दी, बाक, बगुला, बगुली, बागर, बटई, बनमुर्गी, बुलबुल, बादुर, बदुरी, बटेर, बाज, बतक, बोधर, बगेरी, भुचंग, भेंगराज, मैनी, मैना, मधुकड़, महोखा, मुर्गी, मोर, मथबन्हनी (कठफोरनी), लालमुन्नी, लालसर, ललदेइया, सरगट, सुग्गा, सारस, हास, हरिल, डूमर, डिगवच

सर्प

लोहियार, गेहुअन, धोड़करैत, डोंड़ (बभना), धामिन, पनदार, बंसड़ा, सुगवा, बंसपोर, बंसकोपड़ा, बहिरा, अंधा, अजगर, गेंडुर - बैठने का तरीका, छतर - तनने पर, सहर-सहर - चलने पर,

आभूषण :

गले से ऊपर का

मँगटीका, बिजुली, टोप, बाली, फूल, कनफूल, झुमका, नथिया, झुलनी, नथुनी, ठोप, बुलाकी, बेदामी, खुंटली, लवंग, चिरैता, नकबेसर, पानपत्ता, नगदार, सादा, हँसुली, चन्द्रहार, तबक, हैकल, (सिंघड़ा), सितहार, सिकड़ी, मोहर माला, मोटर माला, नेकलेस

बाँह एवं हाथ का आभूषण

बाजू, जोसन, भभूटा, बाँक, हाथशंकर, भुजदण्ड, ककना, पहुँची, बउखा, सटवा, बाला, पहुआ, चूरी, ककनी, ब्रासलेट, अंगुठी, चांदी के बटन

कमर के नीचे का आभूषण

डड़कस, करघनी, गोड़ाई, पायल, छारा, पाजेब, छागल, बिछिया

गहना बनाने वाला सामान

कगमुँही, कसुला, केंठाचिरनी, कैंची, गहुआ, गहुई, खलनी, घरिया, चौधरा, छेनी, जतरी, जमूरी, ठापा, दुमुँही, टेढ़िया, खड़ाबतीस, परगहनी, पंखी, बकलस, बुरूच, बलीठ, भाथी, मरिया, नेहाय, नरी, संड़सी, सेहुनी, घाड़ा, हथौरी, हजारा, सूत खींचवा, सोरा, जस्ता, रंगा, तेजाब, नौसादर, सोहागा

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

सोनारी भाषा

जोंक = ग्राहक, निखारल = भोजन करना, बिरना = पैसा, कोनारी = ग्राहक, सोहागा = शराब, कियाब = सोनार, चीटा = मछली, मोचल = झीटल, खेटल = भागल, दाँतुल = चावल,नाट = घर

धान के प्रकार

कनकजीरा, कतकी, करंगा, कपसार, काला नमक, खेड़ा, घोघी, चौंतिसवा, चेंगउल, जयश्री, जगरनथिया, जंगलगुदी, जंगबहादुर, जड़हन, दूधी, देवसार, बनीसाल, बेलउर, बासमती, बजड़भंग, बरछा बहादुर, बरमा भूसी, सुगापंखी, सेंगरा, सोनाचूर, सोकन, सेल्हा, मनेसरा, मंसूरिया, मरीचा, मधुकड़, मेघनाद, भदई, हाथी झूलन, झारंग, बैराठी, सर्हिअन, अलबेला

अन्य तरह के अन्न

राई, केराव (मटर), रहिला (चना), गुदुली (छेमी का हरा दाना), टंगुनी, चीना, कोदो, सांवा, मडुवा, जनेरा, मेंथ, मसुरी, खेसारी, रहर,मेथ

सब्जी

सेम - ठोढ़वाला, रहरिया, घिवहिया; संडा (हरा प्याज पत्ता), घेंवड़ा (नेनुआ), तरोई - लरहा, झिंगुनिया; तिरकोल, कवाछ, अरई, बंडा, ओल, सुथनी, गुरमी, इमिरती, रमकेरा

भोज्य एवं पेय

कसार, धोंधा - लाई, ढूँढा, तिलबा; तिलकुट, लाटा, खजूर, ठेकुआ, रिकोंच- झूरी; बारा,बरी, कढ़ी, अदौरी, तिलौरी - फूलौरी, चोंथा (पपरी), मकुनी (भभरी), लिट्टी, गुलगुला, पूआ, खीर, तस्मई, लपसी, कांची रोटी, सोहारी, सगौती, कलिया, बेरहिन, रसिआव, दम, कलौंजी, सतपुतिया -बैगन

आम की प्रजाति

असनी, उड़िसहवा, कमली, कठम्मी, कृष्णभोग, कुपरी, कोदइया, खरबूजवा, गोपी, घेघहवा, चौरिया, जर्दा, जेठू, जरबन्दा, टइरी, डंका, दयालसिंह, दउदी मिठुआ, दशहरी, पिउनिया, परोरवा, फजली, बैरिया, बथुआ, बतसवा, बेलमवा, मालदह, लंगड़ा, दीधी, कलकतिया, सफेद लाल, मुंसी, मिरजाफर, मधुकुप्पी, रारी, रोसनतावा, रोहनिया, लंगड़ा, लिटियाही, लोढ़िआवा, लिचिअवा, लटकम्पू, लोईया, सिलवटिया, सिधी, सुकुल, सेरशाह, सिन्दुरिया, सवैया, सबुजवा

आम की अवस्था

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

सिपाला - बड़ा, मोरहन - बड़ा, कील - छोटा, मोजर, कोंढ़ी, सरसई, टिकोढ़ा, आंठी, सन, गुदा, आम (पाकल, डाम्हा, चोपाह, टभका), थउझाउगुच्छा

बाँस की प्रजाति

बीट (उखाड़ कर नया रोपण), बह (नया कोंपल), गोजा (बांस का कोंपड़), खोंघाह (बिना छिला बांस), छीप (टेढ़ बांस), अगलौटा (फूंनगी), मुठबांसी (जिसकी लाठी बनती है), मकोड़ (पतला, लम्बा बांस, जिससे बर्तन बनता है), फूलबांस (बहुत मोटा, दो-दो हाथ पर गिरह वाला, खोखला), ढाठ (घेरा), कोठी (बांस का थला), खूँथ (जड़), कोइन (बांस से जगह-जगह निकलने वाली पतली छड़ी), बांस की जाति (हरवत, निसना, चाप)

लकड़ी सम्बन्धी शब्दावली

बोटा, सिल्ली, बाकल, गोल्टू, चपता, तक्था, बोल्टू, पटरा, सारिल, असरा, हीर, गिरह, गुज्जी, चैला, कुट्टी, झूरी, लौना, कचकल, लरकल, दरकल, लहल, लपल, पोर - गिरह, अड़कसिया - लकड़ी चिरने वाला

गाय के प्रकार

लाली, गोली, धवरी, पिअरी, कारी, मैनी, कुबरी, टिकारी

मछली के नाम

अंधा, कवई, कौआ, कतला, कुत्तवा, कालगोस, कठई, खरही, खोलसी, गोरला, गेहुआँ, गोस्टा, गरई, गुल्ला, गुर्दा, गर्रा, गोल्हिया, गोड़रा, गदी, घुघता, चन्ना, चर्खी, चिपुआ, चिपुई, चेल्हवा, चेंगा, चनरी, चरंगा, जसरी, झींगा, ठारा, डेरवा, टेंगरा, ढालो, तेलगगरी, टेंगुसी, नैनी, पटार, पनवा, पलवा, पतसा, पटगोइंची, फोक्चा, फुलवा, पुसिया, पोठिया, बलोधी, बामी, बघवा, बसाही, बाटा, बोआरी, बजही, बामच, बुल्ला, बरारी, बगसा, बरार, बामी, बइखी, बुल्ला, बंसड़ी, भोला, भकुरा, मुसहा, मलंग, मोय, मागुर, मसार, मँलगी, रोहू, लपची, लाडुस, रेवा, सउरी, सेंकची, सुगवा, सुहिया, सुतरा, सिंहा, सिंही, सोन्हिया, सिलंग, सउरा, हिलसा, हरवा, हुँड़रा, धवई, खेक्सी

मछली पकड़ने के उपकरण

बड़ा महाजाल, महाजाल, भांसा जाल, हिलसइली जाल, बचैली जाल, छांटी जाल, फेकैली जाल, खोरा जाल, छिपौआ जाल, डोरी जाल, फीस स्पॉन्ड, चटजाल, बिनजाल, तिजार जाल, बिछिया जाल, बंसी डोरी, घाना, चिकवन (चिलौंज), ढाका, छैंटा, हांडी, छीप, झांखी, खोरनइया, बर्छी, सहत - बर्छी, (१५-१६ नोकवाला)

कछुए के प्रकार

कटहवा, सिव, ढोंरिया, तिउरा, अमुआ, कढिआँव, कचरा, पचरा

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

बर्तन

गगरा - तांबा, लोहा के, घैला - मिट्टी का, कलसा - पीतल का, कठौत - काठ या अल्युमिनियम का, गेरू- बड़ा लोटा, लोटा - छोटा लोटा, कटोरा, कटोरी, थरिया-छीपा, छिपुली, बलगुन्ना, बहगुन्ना, कलछुल, छोलनी, ढकना, ढकनी, मलिया, कठोली, माट, चट्टी, हंडिया, रही, सितुहा, नादी, नदकोला, पथरी, लोढ़िया, सिलौटी, जांत, ओखर, मूसल, खोइला, चलौना, खपरी, दबिला, बेंचा, झलहा, ढाका, छैंटा, चंगेली, दउरी, पौती, मोन्हा, मुन्हआ, कुरई, कपटी (दही निकालने वाला बर्तन), रमकोरवा, चुक्का, डलिया, फूलडलिया, मौनी, पोटारी, सूप, सुपली, कलसुप, झांपी, बटुला, बटुली, कोहा - छोटा हंडिया

नौका के विषय में

प्रकार - नाव, डेंगी, खोरनइया, घटहा

हिस्सा - मांगा/ गुर्हा, बांक, सुनरा, केंटा, जलई, केरुआरी,लग्गी

नदी में बहने वाला सामान

सथान, फेन, भिलोर, जलकुम्भी, लकड़ी, जल्हुआ, बोगड़ी

घर

पलानी, ओसारा, दोचारा, दालान, बइठका, चउतरा, चौखण्डी, महलाद (अच्छा मकान), किता (मकान संख्या), झरोखा, दुमुहाँ, केवाड़ी, चौखट, झिलमिली, मेहराब, चीक, चिलमन, फटकी, जाफड़ी, खिलान (सूर्य रोशनी दिखे तब), सिंहदरवाजी, अन्हारी, झिटकिली, मुसबिलाई, कीली, मचान, चेंचरा, कोरो, बान (बान्ह), ठाट, कोनसिला, लरही, थून्ही, खम्हा, गवरा, फटकन, बडेंरी, छान्ह, मुड़ेर, ओरी, बाती, जेंवर, भीती, चउकठ, दोगा, गोठौला, मरुआ, मंगरा, टोटिया, थपुआ, नरिया।

जातियाँ

कसाई - मांस बेचने वाला
कलवार - ताड़ी-शराब बेचने वाला
कानू - चावल, दाल, तेल बेचने वाला
कोइरी - सब्जी-बोने बेचने वाला
कमकर - पनभरा, सेवा टहल करने वाला
कूँजड़ा - खीरा-ककरी बेचने वाला

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

गोंड - भंडसारी करने वाला
चूड़ीहार - चूड़ी बेचने वाला
तूरहा - कूंजड़ा
हलुआई - मिष्ठान बेचने वाला
मुसहर - चूहा, कछुआ पकड़ने, खाने वाला
धानुख - रस्सी बटने वाला
बरई - पनहेरी
मनिहार - डफालिन - पटेहरा - टिकुलिहार - ृंगार-प्रसाधन बेचने वाला

मल्लाहों की जाति

केंवट, सोरहिया, खोनवट, मुड़ियारी, चाईं मल्लाह, बनपर, गोढ़ी, बीन, मल्लाह, मछुआर

(सोनपुर , बिहार के मल्लाहों के अनुसार मल्लाही का काम पहले मुसलमान करते थे)।

अहीरों की जाति

कन्नौजिया, जुझौतिया, कृष्णावत, ढरोर

केला के पौध हेतु

छोटा पौधा - पहुँची, बड़ा पौधा -सेल्हा, फूटने पर - थम

वाद्य-नृत्य

हुड़का, पखाउज, पहपंग, खंजड़ी, डुग्गी, टिमकी, छिपी, छिटा, जोड़ी, जलतरंग, डंडताल, रोशनचउकी, एकतारा, पावटी

फर्री नृत्य - अहीर की बारात में
मानर नृत्य - भूत-प्रेत भगाने के लिए
हुड़का नृत्य - निम्न जातियों में
पखाउज नृत्य - निम्न जातियों में

नाटे कद के व्यक्ति के लिए

बौना, टेम्हारी, भुट्टा, ठेंठ, घेचारी, भरबीतना, भूटिया

दिन चर्या

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

झाड़ा-झपटा, दिशा-मैदान, डोल-डाल, फराकित, जंगल-लोटा, खेत गइल, निकसार, टट्टी जाना, हवा पेट खाली कइल, निपटान

बीमारियों के नाम

छेरकटी, पेटगड़ी, चील अंउडेरल, पेट ढब-ढब कइल, टिमकी निकलल, कउड़ी छुआइल, बलतोड़, कपरबथी, अधकपारी, घुघुआइल (फूलल), ओहरल (आराम, दबना), जम्हुआ (टिटनेस), टटाऽता, बथऽता, छेदऽता, खोभऽता, झिनझिनाता, दुखाऽता, टभकता, बिसबिसाता, पेंडुरी चढ़ल, गड़ऽता, हूल आवऽता, ओकाई आवऽता

साधुक्कड़ी भाषा

कमंडल, अंचला, रामनामा, दसपनाह, टांगी, दण्डताल (त्रिशूल वाद्य), पारखत (पूजा-सामग्री), राममड़ैया, जंगल-लोटा (पखाना जाना), पेट खाली कइल (हवा छोड़ना), प्रभाती (दतुअन), बटुआ, धूईं, डोलडाल (पाखाना जाना), नैवेद्य (भात), प्रसाद (भात), बैकुण्ठी (दाल), साग (सब्जी), लंका (मीर्चा), रामरस (नमक), रंगबदल (हल्दी), राधेश्याम (दही), गोरस-पाती (दही-दूध), कृष्णावतार (दही की व्यवस्था), पवित्री/शुद्धि (घी), शनिश्चर (तेल), रामचकरा (झूरी, रिकोंच), सिद्ध (तैयार), अमनिया (शुद्ध, पवित्र), चेतावल (भोजन करना)

कुश्ती के दाँव-पेच

चाटा, बइठी, ढाक, चरखी, स्म, कालाजंघ, सखी, सखा, टांग, ठेपी, ढेंकुली, साठी (बलि बन्द), पटु ढुकल, टांग पर लादल, कुल्हा पर लादल, असवारी, धोबिया पाट, मोहरी कसल, बगली मारल, बनरी, कमर तोड़।

बैल-गाड़ी में प्रयुक्त सामान

चक्का, बड़ी (एदृड्ढ्र), हरिस, जुअठा, पुस्तवान, खुंटरी, लाइन, झुलनी, पछाड़, पटरा, पिढ़ई, बाती, समइल, लंगड़ी, बल्ली, मोहड़ा, आवन, बल्ली, चरही, जोता, सिपुआ

हर-फार

लोहिया, रिजिन, सिनियर, तीनफारा, नवफारा, कल्टी, हर, टांड़ा, टांड़ी, एड़ा, बरही, पत्तर, खेड़ी, हेंगी, पालो, हेंगा, हरनधी, जोता, जाब, घोठा, नाद, घारी, ढेंकुल, कुंडी, लादी, गतान,

पौध नर्सरी सम्बन्धी

पौ मारल, थल्ला मारल, कलम बांधल, अंटा बांधल, दाब बांधल, बाछल, डीभ, बिदाहल, खुरपीआवल, गोजा, कलंगी, कलौंजी, फुनगी, टूसा, पल्लो, करची (बांस की), तारन, छाल

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.